• वर्ष : 1 • अंङ्क : 3 • अगस्त-अक्टूबर, 2014 • ISSN : 2347-6605

वाक् सुधा

VAAK SUDHA

(अन्तर्राष्ट्रीय त्रैमासिक शोध पत्रिका)

(A Scholarly Peer Reviewed Journal)

संरक्षक :

प्रो. दलवीर सिंह चौहान

पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत-विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया

आगामी अंक
30 जनवरी, 2015

रूपेश कुमार चौहान

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक

द्वारा 47, ब्लॉक ए-3, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, दिल्ली-43 से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

दूरभाष संख्या-08287473549, 0991158532, 098106636082

Email: vaaksudha@gmail.com • Website : www.vaaksudha.com

प्रकाशनार्थ सूचना

* लेखक से अनुरोध है कि शोध-पत्र वॉकमैन चाणक्य 905 फॉन्ट एवम् वर्ड या पेजमेकर में टङ्कण करा कर शोध-पत्रिका के ई-मेल पर प्रेषित करें।
* शोध-लेख न्यूनतम 2500 शब्द एवं अधिकतम 10000 शब्द तक मान्य है तथा इसके साथ लेखक का पद-नाम एवं स्वयं का छवि-चित्र अत्यन्त आवश्यक है।
* प्रकाशनार्थ प्राप्त लेख सलाहकार परिषद् एवम् संपादक मण्डल की अनुमति के पश्चात् स्तरीय होने पर ही प्रकाशित होगा।
* लेख में यदि चित्र का प्रयोग हुआ है तो उसे भी अवश्य प्रेषित करें।
* **'वाक् सुधा'** किसी भी तरह के परामर्श का स्वागत करती है, इसलिए अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें।
* यह स्पष्ट किया जाता है कि शोध पत्र में प्रस्तुत तथ्य शोध लेखक के अपने विचार हैं तथा इसमें सलाहकार परिषद् एवं सम्पादक मण्डल के विचारों की उद्भावना स्पष्टतः नहीं है। अतः इसके लिए शोध-लेखक स्वयं उत्तरदायी है।
* शोध-पत्रिका की किसी भी सामग्री को प्रकाशक एवं मुद्रक की जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशन अनुचित होगा।
* **आगामी अङ्क में प्रकाशनार्थ लेख 31 अक्टूबर, 2014 तक अवश्य प्रेषित कीजिए।** यदि आप लेख टङ्कण करा कर भेजने में असमर्थ हैं तो हस्तलिखित प्रति पत्रिका में दिये गये पत्र-व्यवहार के पते पर भेज दें।
* वर्ष के अंतिम अङ्क के प्रकाशन से पूर्व प्रथम अङ्क पत्रिका की वेबसाइट पर अध्ययन हेतु उपलब्ध हो जाएगा।
* अपेक्षित आर्थिक सहयोग अथवा अंशदान के लिए हम आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।
* **कृपया लेख के साथ अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो अवश्य भेजें।**

© सर्वाधिकार सुरक्षित

ISSN : 2347-6605

सामान्य शुल्क		सदस्यता शुल्क	
वैयक्तिक शुल्क (एक प्रति)	**– ₹200**	**सदस्यता शुल्क (वार्षिक)**	**– ₹1200**
संस्थागत शुल्क (एक प्रति)	**– ₹400**	**संस्थागत सदस्यता शुल्क (वार्षिक)**	**– ₹1500**
वैयक्तिक वार्षिक शुल्क	**– ₹700**	**पञ्च वार्षिक शुल्क**	**– ₹6000**
संस्थागत वार्षिक शुल्क	**– ₹1200**	**आजीवन सदस्यता शुल्क**	**– ₹15000**

पत्र-व्यवहार का पता :
मकान नं.-41, सूरज नगर (दुर्गा मंदिर के सामने),
आजादपुर, दिल्ली-110033

सलाहकार परिषद् :

- **महामहोपाध्याय प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री**
  (पूर्व उप-कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)
- **प्रो. शंकर दयाल द्विवेदी**
  (संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
- **प्रो. पवन अग्रवाल**
  (हिन्दी एवं आधुनिक भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय)
- **प्रो. मोहम्मद मंसूर आलम**
  (अध्यक्ष, उर्दू विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया)
- **प्रो. आभा त्रिवेदी**
  (पाश्चात्य इतिहास विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय)
- **डॉ. इन्द्र नारायण सिंह**
  (बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)
- **प्रो. राजेश रंजन**
  (पालि विभाग, नालन्दा नव-महाविहार)
- **डॉ. पतञ्जलि कुमार भाटिया**
  (संस्कृत-विभाग, पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)

सम्पादक मंडल :

- **डॉ. शाहिद तस्लीम**
  (उज्बेक भाषा विशेषज्ञ, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय)
- **डॉ. अजय मिश्रा**
  (भूगर्भ विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय)
- **डॉ. रसाल सिंह**
  (हिन्दी विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज)
- **डॉ. शंकर नाथ तिवारी**
  (संस्कृत विभाग, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, त्रिपुरा)
- **डॉ. चंद्रशेखर पासवान**
  (बौद्ध अध्ययन एवं सभ्यता विभाग, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)

सम्पादक :
डॉ. रूपेश कुमार चौहान
मो. 9540468787, 9266319639

उप-सम्पादक :
डॉ. राम किशोर यादव
मो. 9871600448

प्रबंध सम्पादक :
डॉ. राजेश कुमार
मो. 9891526584

विधिक सलाहकार :
आनन्द विकास मिश्रा

तकनीकी सलाहकार :
स्मित मनहर, विवेक कुमार आदित्य
(बी.टेक.)

मैनेजिंग डायरेक्टर
ठाकुर प्रसाद चौबे
मो. 9810636082

ग्राफिक डिजाइनर :
जे.डी. कंप्यूटर्स, मो. 9818455819

- सभी पद अवैतनिक एवं परिवर्तनीय हैं।
- **'वाक् सुधा'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।
- सारे भुगतान मनीआर्डर : चेक/ बैंक ड्राफ्ट **'वाक् सुधा'** के नाम से किए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चेक में बैंक कमीशन के 35.00 रुपये अतिरिक्त जोड़ें।

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय 6

आचार्य रामयत्न ओझाकृत फलित विकास के नवीन तत्त्व 7

रजनी रानी

महिला सशक्तीकरण और मीडिया 10

डॉ. माला मिश्र

'चेतना का आधार प्राण शक्ति'- वैदिक साहित्य के परिप्रेक्ष्य में 13

डॉ. निशीथ गौड़

प्राचीन भारतीय प्रशासन : अर्थशास्त्र व महाभारत का एक तुलनात्मक अध्ययन 16

अवनीश कुमार

दमयन्ती की साधिकारता 19

डॉ. अभिमन्यु

आश्रम व्यवस्था के अंतिम चरण के रूप में संन्यास आश्रम की महत्ता 22

संजीव प्रकाश

अशोक के हृदय-परिवर्तन में कलिंग युद्ध की भूमिका 26

डॉ. एम.एम. रहमान

संस्कृत शिक्षा- दशा एवं दिशा तथा करणीय कार्य ... 27

डॉ. उमेश कुमार सिंह

महाजनपद काल से मौर्योत्तर काल तक के बौद्ध साहित्यों में वर्णित नारियों की स्थिति 35

मधुलिका सिन्हा

शिक्षक ही शिक्षा-जगत् का आधार स्तंभ है- एक विवेचना 38

प्रभात कुमार

नाट्य रचना : प्रदर्शन और इतिहास का संदर्भ 41

डॉ. अमित सिंह

''स्त्री एवं पुरुष विमर्श'' - वैदिक शिक्षा दर्शन के परिप्रेक्ष्य में 45

रीना कुमारी

बौद्ध धर्म को अखिल भारतीय स्वरूप देने में अशोक का योगदान 48

डॉ. एम.एम. रहमान

धर्मसूत्रों में वर्णित शिक्षा व्यवस्था 50

डॉ. अनुज कुमार

मानव मन एवं साधना 54

डॉ. सुनील कुमार उपाध्याय

रामानन्द दर्शन में ब्रह्म का स्वरूप 57

डॉ. राजेश कुमार

नैतिक जीवन और साध्य : गीता और पाश्चात्य दर्शन 61

डॉ. समीर कुमार मिश्रा

आम-आदमी और समकालीन कहानी 64

सीमा कुमारी

गिरते मानवीय मूल्यों की पड़ताल करता उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' 67

अभिषेक प्रताप सिंह

प्राचीन सांख्याचार्य एवं उनकी कृतियाँ 73

डॉ. वेदनिधि

''राष्ट्र-निर्माण, मीडिया, समाज व संस्कृति'' 77

राकेश कुमार दुबे

अथर्ववेद में वर्णित सामाजिक संरचना एवं समरसता .. 81

डॉ. धनेश कुमार सुमन

कबीर की सामाजिक प्रासंगिकता 85

डॉ. कमलिनी पाणिग्रही

प्रेमचन्द के उपन्यास और आलोचना 88

रोमा रानी

नई कविता के संदर्भ में रस के प्रतिमान की प्रासंगिकता 94

मनेष कुमार मीना

भविष्यपुराण में ऐतिहासिक एवं राजनैतिक तत्त्व 97

डॉ. अशोक कुमार सिंह

स्वयं प्रकाश की कहानियों में स्त्री-संघर्ष का वृत्तांत . 103

रेखा सिंह

अग्नि पुराण में वर्णित आयुर्वेदिक सामग्री 106

संजय कुमार पांडेय

समकालीन हिन्दी उपन्यासों में स्त्री-विमर्श 110

डॉ. कुमारी अनीता

कवि एवं काव्यसर्जना 115

डॉ. शंकर नाथ तिवारी

वक्रोक्ति : एक विश्लेषण 119

डॉ. काकोली रॉय

हिन्दी उपन्यासों का साम्प्रदायिक संदर्भ 122

अजय कुमार

संस्कृत वाङ्मय में जीवन-दृष्टि 126

डॉ. सरस्वती

जनसंचार माध्यमों का सामाजिक दायित्व 130

मीना

ISSN : 2347-6605

गुप्तोत्तरकालीन अभिलेखों में अर्थ-विचार 133
चन्दन कुमार मिश्र
प्रश्नमार्ग में प्रश्नाक्षर सिद्धान्त 135
डा. हर्षबाला
'नंगातलाई का गाँव' में व्यक्त समाज 140
मीना
हिन्दी साहित्य की दोहा-यात्रा 143
धीरेन्द्र कुमार सिंह
हिंदी साहित्य का इतिहास : पुनर्लेखन और चुनौतियाँ (दलित साहित्य के संदर्भ में) 148
मीना
कालविमर्श 151
अनिरुद्ध ओझा
भारतीय भक्ति आन्दोलन और ब्रज-प्रदेश 158
डॉ. ओम मिश्रा
भक्ति आन्दोलन और उसका ब्रज क्षेत्र में प्रसार 161
डॉ. ओम मिश्रा
हिन्दी काव्य शास्त्र में रस सिद्धांत 164
राजीव कुमार
नया सिनेमा, साहित्य और मन्नू भंडारी 168
डॉ. राम किशोर यादव
कृष्णा सोबती के कथा साहित्य में नारी 171
राजीव कुमार
महात्मा गांधी, असहयोग-खिलाफत आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता (बिहार के सन्दर्भ में) 173
डॉ. प्रदीप कुमार
क्रान्तिकारी आंदोलन तथा बिहार की हिन्दी पत्रकारिता 180
डॉ. प्रदीप कुमार
फलितशास्त्र में सन्तान प्राप्ति के विविध योग 189
पीयूष पाण्डेय
वेदान्त दर्शन में मुक्ति की अवधारणा 192
रश्मि पाल
मीमांसादर्शन में भावना व उसके अंशत्रय 195
प्रीति पाण्डेय
गोपेश कुमार ओझा का सामुद्रिकशास्त्र में योगदान ... 198
स्नेहलता पवार
वर्तमान दक्षिण बिहार की पालकालीन धार्मिक परिस्थितियाँ : एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण 201
मृत्युंजय कुमार
महालिङ्ग शास्त्री के प्रहसनों में नाट्य-शिल्प 205
डॉ. ठण्डी लाल मीणा
प्रो. आदेश के प्रवासी महाकाव्य : आदर्शोन्मुख समाज 209
डॉ. बी.के. गर्ग
संत दादू दयाल की सृजनात्मकता की प्रासंगिकता ... 212
डॉ. देवेन्द्र स्वामी
युवा शक्ति, नैतिकता व आध्यात्म : एक दार्शनिक अध्ययन 215
डॉ. मनोज कुमार
उत्तर आधुनिक विमर्श और 'हमजाद' 218
रीनू गुप्ता
ঠাকুরের অন্যতম পীঠস্থান-ময়নাগড় ঃ এক ঐতিহাসিক সত্যের উন্মোচন 222
অনির্বাণ সাহু
नवजागरण और संन्यासी विद्रोह 228
डॉ. लालजी
उपनिषदों में वाक् का स्वरूप 231
डॉ. प्रीति कौशिक
बाणभट्ट की आत्मकथा में चित्रित पात्रों का सामाजिक व्यवस्था के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण 234
डॉ. लालजी
सुशीला टाकभौरे की आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' में अभिव्यक्त दलित-स्त्री अस्मिता-चेतना 238
डॉ. सुनीता सक्सेना
वीरेन्द्र जैन के उपन्यास 'डूब' में अभिव्यक्त समस्याएँ 241
डॉ. प्रमोद कुमार द्विवेदी
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में राजनीतिक विमर्श में धूमिल 245
डॉ. वीणा शर्मा
1658 का राजनीतिक परिदृश्य : धर्मयुद्ध या उत्तराधिकार युद्ध 249
डॉ. मृदुला झा

सम्पादकीय

जनमानस की मानसिकता और चिन्तन को दिशा देने का काम शिक्षक करता है। औपचारिक शिक्षा में 5 वर्ष से 25 वर्ष तक आयु के तमाम विद्यार्थी शिक्षकों की छत्रछाया में रहते हैं। किसी भी शिक्षण संस्थान की आवश्यक इकाई छात्र और शिक्षक दोनों होते हैं। आज अनुशासन के नाम पर इन दोनों के बीच संवादहीनता की स्थिति बनी हुई है। इसलिए शिक्षकों पर छात्रों का विश्वास कम हुआ है। 20वीं सदी में एस. राधाकृष्णन, सर आशुतोष मुखर्जी, वी.के.आर.वी. राव जैसे शिक्षकों की पूजा होती थी। उसी तरह के शिक्षकों के सम्मान में शिक्षक दिवस मनाया जाता है। पहले यह दिवस एक औपचारिकता के रूप में मनाया जाता था। लीक से हटकर कुछ नया करने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस दफा छात्र-छात्राओं से तकनीक के माध्यम से रुबरु होकर शिक्षक दिवस पर शिक्षा की समस्या पर ध्यान दिया है। यह संतोष का विषय है। शिक्षकों के बारे में समाज की धारणा बदली है। फिल्मों में भी शिक्षकों का चित्रण गलत तरीके से किया जा रहा है। खुद शिक्षकों में भी शिक्षा से विमुख होने का संकेत मिल रहा है। श्रेष्ठ शिक्षक कैसा हो? इसको लेकर कोई आदर्श मानदण्ड नहीं बन पाया है। राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के अनुसार स्कूली शिक्षा के सामने सबसे बड़ी चुनौती योग्य शिक्षकों की कमी है। आज जिस तरह दुनिया हिंसा, आतंकवाद, असहिष्णुता की चुनौतियों का सामना कर रही है, इस परिस्थिति में बच्चों को सत्य, सहिष्णुता धर्मनिरपेक्षता और सबको साथ लेकर चलने के गुण सिखाने की सबसे बड़ी जरूरत है। सवाल यह है कि योग्य समर्पित एवं उत्सुक शिक्षक कहाँ से लाएँ, जो बच्चों को ज्ञानवान् क्षमतावान् और गुणवान् बनाने के साथ-साथ वैश्विक नागरिक बना सकें। मानव संसाधन मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार राज्य विश्वविद्यालयों में 40% और केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में 35% शिक्षकों की जगह खाली पड़ी है। जब शिक्षक ही नहीं होगा तो पढ़ाएगा कौन? यह स्थिति प्राथमिक शिक्षा में और भी भयावह है। देश में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य एवं निःशुल्क है। सरकार ने सर्वशिक्षा अभियान के लिए 2014 के बजट में भी 29,000 करोड़ रुपये आवंटित किये हैं। एक गैर सरकारी संगठन की हालिया रिपोर्ट बताती है कि हमारे देश में पाँचवीं कक्षा का बच्चा दूसरी कक्षा के गणित के सवाल हल नहीं कर सकता है। देश के नौनिहालों की बुनियाद कितनी कमजोर है, इसका सहज ही अंदाज लगाया जा सकता है। यह बात सही है कि सर्व शिक्षा अभियान से प्राथमिक स्कूलों में नामांकन दर में वृद्धि हुई है। इमारतें बनी हैं, लेकिन दुर्भाग्य यह है कि काबिल शिक्षकों की नियुक्ति और शिक्षा की गुणवत्ता जैसे गंभीर विषयों पर कहीं चर्चा नहीं हो रही है। उच्च शिक्षा तक आते-आते स्थिति और बिगड़ने लगती है। विश्व के सर्वश्रेष्ठ 200 विश्वविद्यालयों की सूची में एक भी भारतीय विश्वविद्यालय नहीं है। इसका एक कारण यह भी है कि देश के सैकड़ों विश्वविद्यालयों में आज भी हजारों अध्यापकों के पद खाली पड़े हैं। जो हैं वे अतिथि और तदर्थ के रूप में कार्यरत हैं। जब पढ़ाने वाले योग्य अध्यापक ही नहीं हैं तो वहां पढ़ने वाले छात्रों से कैसे अच्छे परिणाम की अपेक्षा हम सभी कर सकते हैं। देश के लाखों विद्यार्थी के लिए पढ़ाई एक प्रमाण पत्र हासिल करने की कवायद मात्र है। वर्षों से कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में परंपरागत पाठ्यक्रमों के आधार पर पढ़ाई होती है। कॉलेजों में जो पढ़ाया जाता है, उसमें से अधिकांशतः रोजगारपरक नहीं है। एक प्रतिष्ठित संस्थान का सर्वेक्षण यह कहता है कि 45% स्नातक रोजगार की दृष्टि से नाकाबिल हैं। 35% के आसपास स्नातक किसी तरह क्लर्क की नौकरी के योग्य हैं। यह आंकड़े तब हैं जब देश में उच्च शिक्षा में नामांकन की दर करीब 18% के आस-पास है। साथ ही 95% अंक पाने वाले प्रतिभाशाली छात्रों के लिए दिल्ली- विश्वविद्यालय के मनपसन्द पाठ्यक्रम में पसंदीदा कॉलेज में नामांकन नहीं हो पाता है। भारत युवा देश है। 65% आबादी 35 वर्ष से कम उम्र के युवाओं की है, जिनको रोजगारपरक शिक्षा की जरूरत है। गरीब, पिछड़े, दलित और मुख्यधारा से कटे लोगों को इस बात का एहसास हो गया है कि शिक्षा ही वह साधन है, जिससे वह राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़ सकते हैं। इसलिए शिक्षा के प्रति इस तबके की जागरुकता सराहनीय है। उच्च शिक्षा के अनुसंधानात्मक और प्रयोगात्मक ज्ञान को तरासने और उसको समाज के लिए उपयोगी बनाने का एक छोटा सा प्रयास वाक् सुधा कर रही है। 21वीं सदी के भारतीय समाज को ज्ञानोन्मुखी बनाने की दिशा में हमारा यह प्रयास कितना सार्थक है, इसका निर्णय सुधी पाठक और गंभीर शोधार्थी ही कर सकते हैं।

रूपेश कुमार चौहान

ISSN : 2347-6605